ग्राम श्री (सुमित्रानंदन पंत)

पाठ का परिचय

हिंदी-साहित्य में सुमित्रानंदन पंत जैसा प्रकृति का कोमलकांत कवि दूसरा नहीं है। प्रस्तुत पाठ **'ग्राम श्री'** उन्हीं की सुप्रसिद्ध रचना है। इस कविता में कविवर पंत ने गाँव की प्राकृतिक सुषमा और समृद्धि का बड़ा मनोहारी चित्र खींचा है। खेतों में दूर तक लहलहाती मखमली फसलें, फल-फूलों से लकदक वृक्षों की शाखाएँ तथा सुदूर तक फैली गंगा की रेती सहृदय व्यक्ति के मन में जो रोमांच उत्पन्न करती है, उसी की सफल अभिव्यक्ति प्रस्तुत कविता में ही गई है।

कविताओं का भावार्थ

ग्राम श्री

1. **फैली खेतों में·····नील फलक!**

   भावार्थ—कविवर पंत खेतों के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं—खेतों में दूर-दूर तक मखमल की तरह कोमल हरियाली फैली हुई है। उस पर सूर्य की किरणें ऐसे लिपटी हुई हैं, मानो चाँदी के समान उज्ज्वल जाली-सी सुशोभित हो रही हो। हरे-हरे तिनके धूप में ऐसे तरंगित हो रहे हैं, मानो उनके हरे-हरे शरीरों में लहरें मारता हरा रक्त झलक रहा है। हरियाली में भरी-पूरी धरती पर आकाश का स्वच्छ नीला आँचल छाया है।

2. **रोमांचित-सी·····तीसी नीली?**

   भावार्थ—कवि कहता है—धरती की शोभा देखकर ऐसा लगता है, मानो धरती प्रसन्नता से रोमांचित हो उठी है। रोमांच के रूप में उसके तन से गेहूँ और जौ की बालियाँ उग आई हैं। अरहर और सनई की सुनहरी पकी फलियाँ रुनझुन की मधुर ध्वनि करती हुई ऐसी सुशोभित हो रही हैं, मानो वे वसुधा की कमर पर बाँधी करधनी के सुंदर घुँघरू हैं। सरसों भी अपनी पीली रंगत लेकर खेतों में खिलखिला रही हैं। सरसों के फूलों से उठने वाली मीठी-हल्की तैलीय महक पूरे वातावरण में फैल रही है और यह देखो, धरती के इस सौंदर्य को निहारने के लिए नीलम की कलियों के समान तीसी के नीले फूल भी हरी-भरी धरती से झाँक रहे हैं।

3. **रंग-रंग के·····वृंतों पर!**

   भावार्थ—कवि पंत कहते हैं—खेतों में चारों ओर विविध रंगों के फूल खिले हुए हैं। उनके बीच में उनसे सटी हुई मटर की फसल इस प्रकार खड़ी हँस रही है, मानो कोई सखी अपनी सजी-धजी सखियों को देखकर प्रसन्नता से हँस रही है। कहीं मखमली पिटारों के समान फलियाँ लटक रही हैं, जिनमें बीजों की लड़ियाँ छुपी हुई हैं। अनेकानेक रंगों के सुंदर-सुंदर फूल खिले हुए हैं और उन पर विविध प्रकार की रंग-बिरंगी तितलियाँ उड़ती फिर रही हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है, मानो फूल ही प्रसन्नतापूर्वक उड़-उड़कर एक डंठल से दूसरी डंठल पर डोलते फिर रहे हों।

4. **अब रजत·····बैंगन, मूली!**

   भावार्थ—कविता के इस पद्यांश में कवि कहता है—ये देखो! आम के पेड़ की डालियाँ सुनहरी-रूपहली मंजरियों से लद गई हैं। पतझड़ की ऋतु आ गई है। ढाक और पीपल के वृक्षों के पत्ते झड़ने लगे हैं। कोयल भी मतवाली हो उठी है, इसीलिए वह मदमस्त होकर गा रही है। कटहल के वृक्ष से सुगंध उठने लगी है। जामुन के बौर की कलियाँ कुछ अधखिली-सी दिखाई देने लगी हैं। जंगल में झरबेरी बेरों से लद गई है। आड़ू, नींबू, अनार आदि फलों के साथ-साथ आलू, गोभी, बैंगन, मूली आदि सब्ज़ियाँ भी खेतों में तैयार खड़ी हैं।

5. **पीले मीठे·····हरी थैली!**

   भावार्थ—कवि कहता है—पीले और मीठे अमरूद पककर तैयार हो गए हैं, क्योंकि उन पर अब लाल-लाल चकत्ते पड़ गए हैं, जो अमरूद के पकने की पहचान है। बेर भी सुनहरे तथा पककर मीठे हो गए हैं। छोटे-छोटे आँवलों से पेड़ की डालियाँ लद गई हैं। पालक के पत्ते खेतों में लहलहा रहे हैं। धनिया भी महमह करके अपनी महक बिखेर रहा है। लौकी और सेम की बेलें फलदार हो गई हैं और खूब फैल गई हैं। मखमल जैसे कोमल टमाटर भी अब पककर लाल हो गए हैं। जगह-जगह मिरचों के गुच्छे बड़ी थैली के समान लटकते दिख रहे हैं।

6. **बालू के·····रहती सोई!**

   भावार्थ—इस पद्यांश में कवि गंगा-तट के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है—गंगा की रेत विविध रंगों से सुशोभित है। उसके किनारे की रेत इस प्रकार टेढ़ी-मेढ़ी (लहरदार) बिछी हुई है, मानो उस पर असंख्य साँप लेटे हुए हों। गंगा के किनारे पर सरपत घास अर्थात् काँस उग आई है। वह फूली हुई काँस अत्यंत सुंदर लगती है। गंगा के रेतीले तट पर तरबूजों की भारी फसल उगी है। आस-पास बगुले विहार कर रहे हैं। वे अपने सिर पर पंजों की उँगलियोंरूपी कंघी फेरते हुए ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो कोई अपनी कलँगी सँवार रहा हो। चक्रवाक पक्षी नदी के बहते हुए जल में तैर रहे हैं। नदी के तट पर देखो तो मगरौठी आनंद से सोई पड़ी है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7. हँसमुख ..... जन-मन!

भावार्थ—कवि कहता है—ग्राम में चारों ओर छाई हरियाली पर सर्दी की सूर्य की धूप पड़ने से चमक आ गई है। ऐसा लग रहा है, मानो हरियाली हँस रही हो। सर्दी की धूप भी खिली-खिली-सी लग रही है। दोनों जैसे हिल-मिलकर सोए पड़े हैं रात ओस-कणों के कारण भीग गई है तारे उनींदे से जान पड़ते हैं, मानो सपनों में खोए हुए हों। इस प्रकार के प्राकृतिक सौंदर्य से संपन्न गाँव की शोभा पन्ने के खुले हुए डिब्बे जैसी लग रही है। उस पर नीला आकाश ऐसा आकर्षक लग रहा है, मानो पन्ने के डिब्बे पर नीला आँचल ढका हुआ हो। सर्दी की समाप्ति पर इस शीतल प्रदेश में एक अतुलनीय अनुपम शांति चारों ओर छाई हुई है और वह चुपचाप अपनी शोभा से लोगों का मन हर रही है।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की-सी उजली जाली!
तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू तल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!

1. खेतों में दूर तक क्या फैला है–
(क) मिट्टी (ख) रेत
(ग) हरियाली (घ) तिनके।

2. हरियाली की विशेषता है–
(क) दूर तलक फैली है (ख) मखमल-सी कोमल है
(ग) धूप-सी उज्ज्वल है। (घ) ये सभी।

3. हरियाली से क्या लिपटी है–
(क) मिट्टी (ख) धूल
(ग) रवि की किरणें (घ) इनमें से काई नहीं।

4. भू तल कैसा है–
(क) श्यामल (ख) कोमल
(ग) कठोर (घ) रेतीला।

5. 'चाँदी की-सी उजली जाली' में कौन-सा अलंकार है–
(क) रूपक (ख) उपमा
(ग) अनुप्रास (घ) यमक।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

(2) रोमांचित-सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली!
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही,
नीलम की कलि, तीसी नली!

1. वसुधा कैसी लग रही है–
(क) दुखी-सी (ख) रोमांचित-सी
(ग) उदास-सी (घ) खिली हुई-सी।

2. अरहर और सनई की किंकिणियाँ किसके समान हैं–
(क) सोने के (ख) चाँदी के
(ग) लोहे के (घ) पीतल के।

3. भीनी तैलाक्त गंध किसके कारण उड़ रही है–
(क) गेहूँ के (ख) अरहर के
(ग) सनई के (घ) फूली सरसों के।

4. हरित धरा से कौन झाँक रहा है–
(क) पीली सरसों (ख) नीली तीसी
(ग) सुनहरी अरहर (घ) इनमें से कोई नहीं।।

5. 'लो, हरित धरा से झाँक रही नीलम की कलि तीसी नीली' में अलंकार है–
(क) अतिशयोक्ति (ख) उपमा
(ग) मानवीकरण (घ) यमक।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(3) अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लद गई आम्र तरु की डाली,
झर रहे ढाक, पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली!
महके कटहल, मुकुलित जामुन,
जंगल में झरबेरी झूली,
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम,
आलू, गोभी, बैंगन, मूली!

1. आम के पेड़ की डालियों किससे लद गई हैं–
(क) पक्षियों से (ख) फलों से
(ग) मंजरियों से (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. आम की मंजरियाँ कैसी हैं–
(क) सोने जैसी (ख) चाँदी जैसी
(ग) सोने-चाँदी जैसी (घ) पीतल जैसी।

3. किन पेड़ों के पत्ते झर रहे हैं–
(क) आम और नीम के (ख) ढाक और पीपल के
(ग) बरगद और साल के (घ) आड़ू और अमरूद के।

4. कौन मतवाला हो उठा है–
(क) किसान (ख) चरवाहा
(ग) कोयल (घ) मोर।

5. कौन-से फल और सब्ज़ियाँ फूल गए हैं–
(क) आड़ू, नींबू, अनार (ख) आलू, गोभी
(ग) बैंगन, मूली (घ) ये सभी।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(4) बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती
सुंदर लगती सरपत छाई
तट पर तरबूजों की खेती;
अँगुली की कंघी से बगुले
कलँगी सँवारते हैं कोई,
तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर
मगरौठी रहती सोई!

1. गंगा की रेती किससे अंकित है–
(क) फूलों से (ख) बालू के साँपों से
(ग) पक्षियों के चित्रों से (घ) मनुष्य के पद-चिह्नों से।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. **गंगा की रेती कैसी है–**
(क) दोरंगी (ख) तिरंगी
(ग) पचरंगी (घ) सतरंगी।

3. **गंगा के तट पर किसकी खेती सुंदर लग रही है–**
(क) गेहूँ की (ख) मटर की
(ग) तरबूजों की (घ) खरबूजों की।

4. **बगुले क्या कर रहे हैं–**
(क) उड़ रहे हैं
(ख) मछलियाँ पकड़ रहे हैं
(ग) बैठे हुए हैं
(घ) अँगुली की कंघी से कलँगी सँवार रहे हैं।

5. **सुरखाब क्या करते हैं–**
(क) तट पर सोए रहते हैं। (ख) पानी में तैरते रहते हैं।
(ग) दाना चुगते रहते हैं। (घ) इधर-उधर दौड़ते रहते हैं।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(5) हँसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अँधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खाए–
मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम–
जिस पर नीलम नभ आच्छादन–
निरूपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन-मन !

1. **कवि ने हरियाली को कैसी बताया है–**
(क) उदास (ख) हँसमुख
(ग) खिली हुई (घ) मुरझाई हुए।

2. **तारों की क्या स्थिति है–**
(क) टिमटिमा रहे हैं (ख) लुप्त हो रहे हैं
(ग) स्वप्नों में खोए-से हैं (घ) खूब चमक रहे हैं।

3. **गाँव कैसा लग रहा है–**
(क) मरकत के खुले डिब्बे-सा (ख) मोतियों के खुले डिब्बे-सा
(ग) चाँदनी में नहाया हुआ-सा (घ) अँधेरे में डूबा हुआ-सा।

4. **अपनी शोभा से जन-मन को कौन हरता है–**
(क) हरे खेत (ख) गंगा का तट
(ग) स्निग्ध शांत गाँव (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. **'नीलम नभ' में कौन-सा अलंकार है–**
(क) यमक (ख) उपमा
(ग) श्लेष (घ) रूपक।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. **'ग्राम श्री' कविता के कवि का नाम है–**
(क) केदारनाथ अग्रवाल (ख) राजेश जोशी
(ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) श्रीधर पाठक।

2. **सुमित्रानंदन पंत का जन्म कब हुआ–**
(क) सन् 1900 में (ख) सन् 1910 में
(ग) सन् 1904 में (घ) सन् 1905 में।

3. **'ग्राम श्री' कविता का वर्ण्य-विषय है–**
(क) गाँव की दुर्दशा का वर्णन
(ख) गाँव की सुंदरता और समृद्धि का वर्णन
(ग) गाँव की गरीबी और अशिक्षा का वर्णन
(घ) शहर की भाग-दौड़ का वर्णन।

4. **कोमल हरियाली की तुलना किससे की गई है–**
(क) फूलों से (ख) रूई से
(ग) मखमल से (घ) मक्खन से।

5. **तिनकों के हरे तन पर क्या झलक रहा है–**
(क) ओस की बूँदें (ख) पसीने की बूँदें
(ग) हरा रुधिर (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. **मटर की लटकती हुई फलियाँ कैसी लगती हैं–**
(क) उँगलियों जैसी (ख) मूँगफली जैसी
(ग) मखमली पेटियों जैसी (घ) थैलियों जैसी।

7. **अमरूदों की क्या विशेषता बताई गई है–**
(क) वे पीले रंग के हैं
(ख) वे मीठे हैं
(ग) उनमें लाल-लाल चित्तियाँ पड़ी हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

8. **पके बेरों का रंग कैसा हो गया है–**
(क) लाल (ख) पीला
(ग) सुनहरा (घ) हरा।

9. **कौन महक रहा है–**
(क) पालक (ख) धनिया
(ग) अदरक (घ) आँवला।

10. **किसकी बेल फैल गई हैं–**
(क) लौकी और सेमफली की (ख) तरबूज और खरबूजे की
(ग) ककड़ी और करेले की (घ) इनमें से किसी की नहीं।

11. **मखमली टमाटर कैसे हो गए हैं–**
(क) पीले (ख) लाल
(ग) हरे (घ) काले।

12. **गंगा के तट पर कौन सोया रहता है–**
(क) बगुला (ख) हंस
(ग) मगरौठी (घ) सुरखाब।

13. **'नील फलक' किसे कहा गया है–**
(क) नीले तंबू को (ख) नीले समुद्र को
(ग) नीले आकाश को (घ) इनमें से किसी को नहीं।

14. **सुमित्रानंदन पंत का जन्म किस जिले में हुआ–**
(क) अल्मोड़ा में (ख) नैनीताल में
(ग) टिहरी में (घ) हरिद्वार में।

15. **पंत जी की रचना नहीं है–**
(क) वीणा (ख) ग्राम्या
(ग) पल्लव (घ) हिम तरंगिनी।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ग) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (ग) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (ग) **13.** (ग) **14.** (क) **15.** (घ)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' क्यों कहा है?

उत्तर : कवि ने गाँव को उसकी शोभा श्री के कारण 'हरता जन मन' कहा है। गाँव की शोभा अनुपम है। खेतों में दूर-दूर तक हरियाली का

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मखमल-सा बिछा हुआ है। उस पर सूरज की किरणों की सुनहरी-रूपहली जाली-सी लिपटी है, अर्थात् हरियाली पर धूप चमक रही है। सारी वसुंधरा पूरी तरह प्रसन्न दिखाई देती है। गेहूँ, जौ, अरहर, सनई, सरसों आदि की फसलें उग आई हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की रंगीन तितलियाँ रंग-बिरंगे फूलों पर मँडरा रही हैं। आम, बेर, आड़ू, अनार, जामुन, नींबू, आँवला आदि फल भरपूर पैदा हुए हैं। आलू, गोभी, बैंगन, मूली, पालक, धनिया, टमाटर, कटहल, लौकी, सेम, मिरच आदि सब्ज़ियाँ खूब फल-फूल रही हैं। गंगा के तट पर तरबूजों की खेती फैलने लगी है। पक्षी जल में विहार करके आनंदित हो रहे हैं। ये सभी दृश्य मनमोहक बन पड़े हैं इसलिए कवि ने गाँव के लिए 'हरता जन मन' उचित ही कहा है।

प्रश्न 2 : कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है?

उत्तर : कविता में शिशिर-ऋतु के सौंदर्य का वर्णन है। इसी मौसम में ढाक और पीपल के पत्ते झड़ते हैं। आम के वृक्षों में बौर आते हैं चारों ओर फल-फूल खिलते हैं। तितलियाँ फूलों और मंजरियों आदि की सुगंध पर मँडराती फिरती हैं। आलू, गोभी, धनिया, पालक, मूली आदि सब्ज़ियाँ भी इसी ऋतु की फसलें हैं।

प्रश्न 3 : गाँव को 'मरकत डिब्बे-सा खुला' क्यों कहा गया है?

उत्तर : गाँव में चारों ओर मखमली हरियाली और रंगों की लाली छाई हुई है। विविध प्रकार की फसलें खेतों में लहलह-महमह कर रही हैं। वातावरण फूलों, फलों, सब्ज़ियों की सुगंध से गमक रहा है। रंग-बिरंगी तितलियाँ विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों पर उड़ती फिर रही हैं। चारों ओर रंगीन, कोमल सौंदर्य जहा हुआ-सा दिखाई दे रहा है। सूरज की मीठी-मीठी धूप और किरणों के सुनहरे-रूपहले तार की जाली एक मोहक प्रभाव और आकर्षक उत्पन्न कर रही है। सौंदर्य जैसे जगमग-जगमग कर रहा है। इसी कारण कवि ने गाँव को 'मरकत डिब्बे-सा खुला' कहा है।

प्रश्न 4 : अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर : अरहर और सनई के सुनहरे खेतों को देखकर कवि को ऐसा लगता है जैसे सारी वसुधा ने अपनी कमर पर सुनहरे रंग की घुँघरुओं वाली करधनी धारण कर रखी हो। आशय यह है कि अरहर और सनई के पौधों पर सुनहरे रंग की फलियाँ उग आई हैं, जिनमें पड़े हुए बीज हवा के झोंकों से बज उठते हैं।

प्रश्न 5 : आकाश और धरती के मिलन का दृश्य अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : नीचे कोमल मखमली हरियाली से सजी-धजी धरती है। ऊपर नीला आकाश छाया हुआ है। हरियाली से आकाश में चमकते सूरज की किरणें कुछ इस प्रकार से लिपटी हैं, जैसे तारकशी की सजावट हो रही हो। दूर धरती और आकाश आपस में मिलते हुए दिखाई दे रहे हैं, मानो धरती का सौंदर्य देखकर आकाश उस पर झुककर उसका आलिंगन करने को तत्पर हो।

प्रश्न 6 : वसुधा अपना रोमांच किस प्रकार प्रकट कर रही है?

उत्तर : वसुधा गेहूँ और जौ की बालियाँ उगाकर अपना रोमांच प्रस्तुत कर रही हैं उसने अपनी कटि पर अरहर और सनई की फलियोंरूपी घुँघरुओं वाली करधनी पहन रखी है। उसने नीले-पीले रंगवाले सुंदर वस्त्र धारण कर रखे हैं। उसके मन का आनंद उसके तन की सुगंध के रूप में चारों ओर फैल रहा है।

प्रश्न 7 : कवि ने अरहर और सनई की शोभा किस प्रकार वर्णित की है?

उत्तर : अरहर और सनई के सुनहरे रंग और बजती हुई फलियों को देख कवि कल्पना करता है कि ये वसुधा की कमर पर सुशोभित घुँघरूदार सुनहरी-रूपहली करधनी हैं।

प्रश्न 8 : सरसों की फसल आ जाने से क्या प्रभाव उत्पन्न हुआ है?

उत्तर : सरसों की फसल आ जाने से दो प्रभाव उत्पन्न हुए हैं–

(i) चारों ओर खिला हुआ पीला रंग दिख रहा है।

(ii) वातावरण में सरसों की तैलीय महक फैल गई है।

प्रश्न 9 : फूल स्वयं क्यों वृंतों से वृंतों पर उड़ते प्रतीत होते हैं?

उत्तर : फूल एक वृंत से दूसरे वृंत पर उड़ते फिरते प्रतीत होते हैं। इसका कारण यह है कि उड़ती हुई तितलियाँ फूल के जैसी ही रंग-बिरंगी हैं। वे स्वयं ही फूलों जैसी प्रतीत होती हैं। इसलिए जब वे एक वृंत से दूसरे वृंत पर उड़ती फिरती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो स्वयं फूल ही एक वृंत से दूसरे वृंत पर उड़ते रहे हों।

प्रश्न 10 : सब्ज़ियों की कौन-कौन-सी विशेषताएँ कविता में वर्णित हैं?

उत्तर : सब्ज़ियों की सम्मिलित रूप से एक बड़ी विशेषता तो यह है कि वे भरपूर मात्रा में उगी हैं, खेतों में खूब फली-फूली हैं। इसके अतिरिक्त पालक लहलहा रहा है। धनिया महक रहा है। टमाटर मखमली अर्थात् बहुत कोमल हैं और वे स्वाभाविक रूप से पूरी तरह पककर लाल हो गए हैं।

प्रश्न 11 : 'हँसमुख हरियाली' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हरियाली पर सूर्य की किरणें पड़ रही हैं। सर्दी की सुनहरी धूप के कारण उस पर चमक आ गई है। जिस प्रकार प्रसन्न व्यक्ति के हँसने पर उसके चेहरे पर चमक आ जाती है, उसी प्रकार हरियाली भी चमक रही है। यही 'हँसमुख हरियाली' का आशय है।

प्रश्न 12 : ग्राम की तुलना मरकत के खुले डिब्बे से क्यों की गई है?

उत्तर : ग्राम की तुलना मरकत के खुले डिब्बे से उसकी हरित शोभा के कारण की गई है। गाँव के खेतों में मखमली हरियाली छाई हुई है। रंग-बिरंगे फूल-फल और फसलें हैं। कहीं रंगीन फूलों पर तितलियाँ मँडरा रही हैं और कहीं लहलहाती-महकती फसलें सुगंध बिखेर रही हैं। ऐसा लगता है जैसे धरती ने अपने शृंगार में कोई कंजूसी नहीं बरती है। धरती के इस सौभाग्यशाली रूप को दर्शाने के लिए मरकत के खुले डिब्बे से गाँव की तुलना अत्यंत सटीक बन गई है।

प्रश्न 13 : कवि ने वसुधा को किस प्रकार रोमांचित दिखाया है?

उत्तर : कवि ने वसुधा को रोमांचित नायिका के समान चित्रित किया है। रोमांच का अभिप्राय है–हर्ष की अधिकता। प्रसन्नता के आवेश के कारण गेहूँ और जौ में बालियाँ उग आई हैं। अरहर और सनई की सुनहरी फलियाँ घुँघरुओं वाली करधनी के रूप में पृथ्वीरूपी वधू पर सज गई हैं। पीली-पीली सरसों का विस्तार देखते ही बनता है। वातावरण में उसकी तैलीय महक फैल रही है। अलसी में नीले फूल खिलखिला रहे हैं। रंग-बिरंगे फूलों पर उड़ती-फिरती रंग-बिरंगी तितलियाँ वसुधा का रोमांच प्रकट कर रही हैं।

प्रश्न 14 : कवि ने तितलियों और फूलों में क्या समानता दिखाई है? उनके सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कवि ने फूलों और तितलियों में रंगों की विविधता की दृष्टि से समानता दिखाई है। गाँव में चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। उन पर रंग-बिरंगी तितलियाँ मँडरा रही हैं। वे तितलियाँ जब एक वृंत से दूसरे वृंत पर जाती हैं तो ऐसा लगता है, मानो फूल ही एक वृंत से दूसरे वृंत पर उड़कर जा रहे हैं।

प्रश्न 15 : वसंत-ऋतु में कौन-कौन-से फल और सब्ज़ियाँ उगती हैं?

उत्तर : वसंत-ऋतु में आड़ू, अनार, अमरूद, बेर आदि फल पक जाते हैं। जामुन के फल अधपके-से हो जाते हैं और आम के पेड़ों पर बौर आ जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वसंत-ऋतु में सब्ज़ियों की तो बहार ही आ जाती है। आलू, गोभी, बैंगन, मूली, आँवला, पालक, धनिया, टमाटर तथा मिरच बड़ी मात्रा में धरती की गोद को भर देते हैं।

प्रश्न 16 : वसंत-ऋतु में सूर्य की किरणें सौंदर्य का कैसा साम्राज्य रचती हैं?

उत्तर : वसंत-ऋतु में सूर्य की किरणें खेतों में छाई हरियाली को चमका देती हैं। किरणों की सुनहरी और रूपहली रोशनी खेतों की मखमली फसल पर चमकदार जाली-सी बुन देती है। तिनके तक सजीव हो उठते हैं। हरियाली हँसती हुई-सी जान पड़ती है। हिलते हुए तिनकों के तन में हरा-हरा रक्त लहर मारता प्रतीत होता है।

प्रश्न 17 : वसंत-ऋतु में रात्रिकालीन ग्रामीण सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर : वसंत-ऋतु में रात्रि के समय हल्की-हल्की ठंड होती है। वातावरण में ओसकण व्याप्त होते हैं, इसलिए रात भीगी हुई-सी जान पड़ती है। आकाश में टिमटिमाते तारे दिखते हैं तो ऐसा लगता है, जैसे वे स्वप्नों में खोए हुए-से हैं, मदहोश हैं। कभी वे आँखें खोल लेते हैं, कभी बंद कर लेते हैं। हर ओर कोमल, निर्मल शांति छाई है।

प्रश्न 18: कविता 'ग्राम श्री' के द्वारा कविवर पंत की कौन-सी काव्य-प्रवृत्ति निखरकर सामने आती है?

उत्तर : कविता 'ग्राम श्री' के द्वारा कविवर पंत का प्रकृति-प्रेम, कोमल कल्पना और स्वच्छंद प्रवृत्ति निखरकर सामने आती है। ग्रामीण प्रकृति के सूक्ष्म वर्णन में उनका शब्द-शिल्प देखते ही बनता है। भारतीय गाँव की वास्तविक सुषमा उसकी कृषि से ही है, यह बात बखूबी इस कविता में दिखाई पड़ती है। कवि ने गंगा के तट, सर्दी की धूप, लहलहाती खेती, फूलों और फलों की भरपूर फसल, अनेकानेक मौसमी सब्ज़ियों और फलों के नाम ऐसी तन्मयता से गिनाए हैं कि कवि उनके विषय में पूर्ण ज्ञान रखने वाला प्रतीत होता है। सूरज, चाँद, तारे, धरती, आकाश, नदी आदि के वर्णन में कवि ने संपूर्ण प्रकृति-जगत् को शब्दों के द्वारा जीवंत कर दिया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कवि निश्चय ही गंभीर एवं सूक्ष्म प्रकृति-प्रेमी है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर-विकल्प चुनकर लिखिए–*

हँसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अँधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खाए–
मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम–
जिस पर नीलम नभ आच्छादन–
निरूपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन-मन !

1. कवि ने हरियाली को कैसी बताया है–
(क) उदास (ख) हँसमुख
(ग) खिली हुई (घ) मुरझाई हुए।

2. तारों की क्या स्थिति है–
(क) टिमटिमा रहे हैं (ख) लुप्त हो रहे हैं
(ग) स्वप्नों में खोए-से हैं (घ) खूब चमक रहे हैं।

3. गाँव कैसा लग रहा है–
(क) मरकत के खुले डिब्बे-सा (ख) मोतियों के खुले डिब्बे-सा
(ग) चाँदनी में नहाया हुआ-सा (घ) अँधेरे में डूबा हुआ-सा।

4. अपनी शोभा से जन-मन को कौन हरता है–
(क) हरे खेत (ख) गंगा का तट
(ग) स्निग्ध शांत गाँव (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. 'नीलम नभ' में कौन-सा अलंकार है–
(क) यमक (ख) उपमा
(ग) श्लेष (घ) रूपक।

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. मटर की लटकती हुई फलियाँ कैसी लगती हैं–
(क) उँगलियों जैसी (ख) मूँगफली जैसी
(ग) मखमली पेटियों जैसी (घ) थैलियों जैसी।

7. कौन भहक रहा है–
(क) पालक (ख) धनिया
(ग) अदरक (घ) आँवला।

8. सुमित्रानंदन पंत का जन्म किस जिले में हुआ–
(क) अल्मोड़ा में (ख) नैनीताल में
(ग) टिहरी में (घ) हरिद्वार में।

निर्देश–*दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है?

10. आकाश और धरती के मिलन का दृश्य अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

11. सब्ज़ियों की कौन-कौन-सी विशेषताएँ कविता में वर्णित हैं?

12. कवि ने वसुधा को किस प्रकार रोमांचित दिखाया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in